श्री विश्वकर्मा जी

श्री
विश्वकर्मा
पूजा विधि

पं. अमृत लाल शास्त्री

श्री

विश्वकर्मा पूजा विधि

(भाषा टीका सहित)

✧ लेखक एवं प्रकाशक ✧

पं. अमृत लाल शास्त्री
विश्वकर्मा मंदिर के पास
गंगा मैया, जबलपुर (म.प्र.) - ४८२ ००१
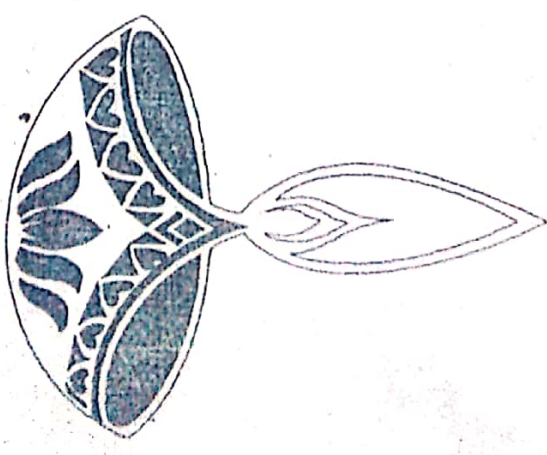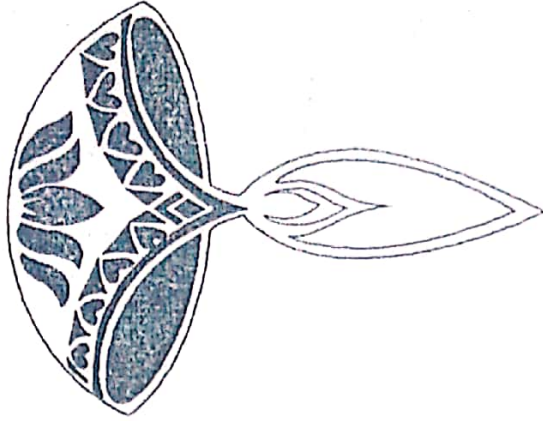
मूल्य - १५/-

भगवान श्री विश्वकर्मा

''यो विश्वं जगतं करोत्यतः सः विश्वकर्मा'' जो समस्त संसार की रचना करता हे वह है विश्वकर्मा। भगवान श्री विश्वकर्मा की पावन जयन्ती प्रति सम्बत भाद्र मास में कन्या संक्रान्ति के दिन राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप में मनाई जाती है। भगवान विश्वकर्मा का एक स्वरुप पांच मुख, दस भुजा, लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्मा विष्णु महेश से वंदित सौभ्य स्वरुप है इस रुप से भगवान विश्वकर्मा प्राकृतिक रचना (छिति-जल पावक गगन समीरा) करने वाले है। दूसरा स्वरुप एक मुख, चार भुजा, वृद्ध रुप है इस रुप से भगवान विश्वकर्मा प्रकृति में कृत्रिम रचना करके नीरस संसार में सुख रुपी रस भरने वाले कहे जाते है। प्रकृति एवं कृति दोनों प्रकार की रचना करने के कारण ही परमात्मा के दोनों रुपों को वेदों से लेकर पुराणों तक ''विश्वकर्मा'' नाम से सम्बोधित किया गया है। और आज भी भगवान विश्वकर्मा द्वारा उत्पन्न शिल्प कर्म करने वाले को विश्वकर्मा कहा जाता है। भगवान विश्वकर्मा के पांच पुत्रों में मनु लौह कर्म के, मय काष्ठ कर्म के, त्वष्टा कांसे ताम्बे के बर्तन आदि के, शिल्पी, मूर्ति आदि शिल्प कर्म के और दैवज्ञ सोने चाँदी के आभूषण निर्माण कर्म के अधिष्ठाता है। इन पांच पुत्रों की सन्तान संसार में पांचाल ब्राह्मण के नाम से प्रसिद्ध है। प्रत्येक युग में शिल्प की विशेषताऐं देखने को मिलती है। महाभारत के सम्पूर्ण युद्ध में शिल्प ही प्रधान था जो अस्त्रों शस्त्रों के रुप में दिखाई देता हे। आज भी शिल्प अर्थात विज्ञान का ही युग चल रहा है। ऐसे विज्ञान के दाता भगवान विश्वकर्मा की पूजा करना प्रत्येक मानव का परम धर्म है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह छोटी सी पुस्तक ''विश्वकर्मा पूजा विधि'' प्रकाशित की जा रही है मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रत्येक विश्वकर्मा चरणानुरागी इससे पूर्ण लाभ प्राप्त करेगा।

लेखक
पं. अमृत लाल शास्त्री
गंगा मैया, जबलपुर

।। श्री विश्वकर्मा स्तुति ।।

तुं अखण्ड ब्रह्म अगोचरा, श्री विश्वकर्मा नमो नमः ।
तुं अगनि पवन तूं गगन धरा, श्री विश्वकर्मा नमो नमः ।।१।।
तेरा ओम रूप है हे हरि, तूं अनन्त है न इति श्री ।
तुं अनादि निर्गुणी गुण भरा, श्री विश्वकर्मा नमो नमः ।।२।।
तुं है ब्रह्मदेव जगत पिता, तुं ही विष्णु रूप में पालता ।
तूं महेश रूप है जग हरा , श्री विश्वकर्मा नमो नमः ।।३।।
प्रभो स्वर्ग में तुं सुरेश है, तुं गगन में चन्द्र दिनेश है ।
तुं धरा में नील समुन्दरा, श्री विश्वकर्मा नमो नमः ।।४।।
तूं है वेद ज्ञान में ध्यान में, तुं गुरू है मुक्ति प्रदान में ।
तेरा काल रूप भयंकरा, श्री विश्कर्मा नमो नमः ।।५।।
कभी भूमिभार उतारने, कभी भक्त काज संवारने ।
तुं युगों-युगों से है अवतरा, श्री विश्वकर्मा नमो नमः ।।६।।
तेरा बास सबमें समान है, तेरा हर स्वरुप महान है ।
तूं है विश्वकर्ता विश्वम्भरा, श्री विश्वकर्मा नमो नमः ।।७।।
तूं अखण्ड ब्रह्म अगोचरा, श्री विश्वकर्मा नमो नमः ।

।। भगवान श्री विश्वकर्माष्टक ।।

ॐ ब्रह्म रूपम नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं पितामहः ।
विराटाय नमस्तुभ्यं विश्वकर्मन नमो नमः ।। १।।
आकृति कल्पना नाथं विनस्य च दायकं ।
सर्वसिद्धि प्रदातारं विश्वकर्मन नमो नमः ।।२।।
पुस्तकं ज्ञान सूत्रं च कम्बीं सूत्रं कमन्डलम् ।
बृद्ध रूपम महा तेजः विश्वकर्मन नमो नमः ।।३।।
दर्शं वै दर्श रूपेण नाना संकट हारकम् ।
तारका नादी संसारातो विश्वकर्मन नमो नमः ।।४।।
ब्रह्माण्डं अखिलादेवानां सत्यं च सर्व वर भूतलम् ।
लीलायाम रचितयेनं विश्वकर्मन नमो नमः ।।५।।
विश्व व्यापिन्नमस्तुभ्यं त्र्यम्बकं हंस वाहनं ।
सर्व क्षेत्रीयनिवासाय विश्वकर्मन नमो नमः ।।६।।
निराभाषाय नित्याय सत्यं ज्ञानान्तरात्मने ।
विशुद्धाय विदुराय विश्वकर्मन नमो नमः ।।७।।
नमो वेदान्त वेद्यामः वेद मूल निवासिने ।
नमो विविक्त चेष्टाय विश्वकर्मन नमो नमः ।।८।।
यो नरः पठेतनित्यं विश्वकर्माष्टकं इदम् ।
धनं धर्मं च पुत्रकं लभेदऽन्ते परां गतिम् ।।९।।

भगवान श्री विश्वकर्मा पूजा विधि

यजमान (पूजन करने वाला) स्नानादि नित्य क्रिया सम्पन्न कर शुद्ध वस्त्र धारण कर शुद्ध आसन पर बैठकर मार्जन करें –

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सः वाह्याभ्यन्तरः शुचि. ॥

आचमन – ॐ अमृतोपस्तरण मसि स्वाहा ॥१॥

ॐ अमृतोपिधान मसि स्वाहा ॥२॥

ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयी श्री श्रयतां स्वाहा ॥३॥

न्यास – बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अंगुलियों (तर्जनी को छोड़कर) से अंग न्यास करें –

ॐ वाङ्मे आस्येऽस्तु ॥१॥ (मुख स्पर्श करें)

ॐ नार्शोमे प्राणोऽस्तु ॥२॥ (नासिका स्पर्श)

ॐ अर्क्षोणमे चक्षुरऽस्तु ॥३॥ (नेत्र स्पर्श)

ॐ कर्णयोंमे श्रोत्रमऽस्तु ॥४॥ (कान स्पर्श)

ॐ बाहुंवो मे बलमऽस्तु ॥५॥ (भुजा स्पर्श)

ॐ ऊर्वो मे ओजोऽस्तु ॥६॥ (जंघा स्पर्श)

ॐ अरिष्टानि मे अंङगानि तनुस्तन्वा मे सह सन्तु ॥७॥ (शेष जल सम्पूर्ण शरीर में छिड़के)

शिखा बंधन– शिखा (चोटी) में गांठ लगावे यदि शिखा न हो तो शिखा स्थान को स्पर्श करे –

ॐ चिद्रूपिणी महामाये दिव्य तेजः समन्विते।

तिष्ठ देवी शिखा मध्ये तेजो वृद्धि कुरूष्व मे ॥

पृथ्वी पूजन–ॐ पृथ्वी त्वया धृतालोका देवित्यं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू च मम आसनम् ॥

ॐ पृथ्वी दैव्ये नमः अर्घ, पाद्यं, अक्षतं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्य च दक्षिणाम् समर्पयामि ॥

संकल्प–हांथ में अक्षत, पुष्प एवं जल लेकर संक्लप करें –

ॐ विष्णु विष्णु विष्णु नमः परमात्मने श्री पुराण पुरूषोत्तमस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रर्वतमानस्य आद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टा विशंति तमे कलियुगे प्रथम चरणे जम्बूदीपे

भारतवर्षे भरत खण्डे आर्यावर्तान्तरगत ब्रह्मावैर्तक देशे पुण्य प्रेदेशे वौद्धावतारे वर्तमाने यथा नाम सम्वतसरे अमुकायने महामाङल्य प्रदेशानाम उत्तमे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक राशि स्थिते सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरू, शुक्र, शनिषु शुभ योगे शुभ करणे एवं गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुष्य तिथौ सकल शास्त्र श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति कामः अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुकोऽहं ममात्मनः सपुत्र, स्त्री, वन्धु वान्धवस्य श्री विश्वकर्मा प्रीत्यिर्थे च आर्यु आरोग्य उपसर्ग एश्वर्योत्तरोन्नति प्राप्तयर्थे च दुख दारिद्रय दुर्भिक्ष दुर्भाग्य उपसर्ग महामारी उल्का पात दुःस्वप्न बाल ग्रह दशा अन्तरदशा गोचर दशा दोषोपशान्तयर्थे पृथ्वी गौर गणेश वरूण नवग्रह आदि देव सहितं श्री विश्वकर्मा परमेश्वर पूजनं अहं करिष्ये ।

तत्पश्चात् यजमानं हांथ में अक्षत पुष्प लेवे एवं आचार्य स्वस्ति वाचन करें –

ॐ ॥ स्वस्ति वाचन ॥ ॐ

हरि ॐ स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाः विश्वे वेदः स्वस्ति नः स्ताक्ष्योंऽरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पति र्दधातु ॥ पयः औषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयः स्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम ॥ विष्णोरराट मसि विष्णोःश्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवोऽसि वैष्णव मसि विष्णो वेत्वां ॥ अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता वसुओ देवता रूद्रो देवता आदित्या देवता मरूतो देवता विश्वे देवा विश्वकर्मा देवता बृहस्पर्तिदेवतेन्द्रो देवता वरूणो देवता ॥ द्यौः शान्ति रन्तारिक्ष ॐ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिं औषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति ब्रह्म शान्ति सर्व ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधिः ॥ एतं ते देव सवितुर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेनमामव ॥

ॐ विश्वानि देव सविर्तुदुरितानि परासुवः यदभद्रं तन्न आसुव ।। इमः रूद्राय तवसे कपर्द्दिनेक्षय द्वीराय प्रभराम हे मतिः यथा शम् द्वीपदे शंचतुष्पदे विश्वे पुष्टं ग्रामे अस्मन्नातुरम ।। ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञमिमन्तन्नो त्वरिष्टं यज्ञ्ꣳ समिमन्द धातु विश्वेदेवाः सः इह मोदयन्तामोम्प्रतिष्ठा एषवै प्रतिष्ठानां यत्रै तेनाय यजन्तेन सर्व मेव प्रतिष्ठतम्भवंतुः ।।

।। श्री गणेश पूजन ।।

हरिॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवा महे वसोमम आहम् जानि गर्भधमात्वम् जासि गर्भधम् ।।१।।

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो ब्रातेभ्यो ब्रतपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो ।।२।।

ॐ सुमुखश्चैक दंतश्च कपिलो गजकर्णकः लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भाल-चन्द्रो गजाननः ।।३।।

द्वादशैतानि नामानि या पठेच्छृणु यादपि विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।४।।

ॐ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः निर्विघ्नं कुरूमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा। अभिप्सितार्थ सिद्धयर्थे पूजितो यः सुरासुरैः सर्व विघ्न हरं गौरी पुत्रं आवाहयाम्यहम् ।।५।।

श्री मन्महा गणाधिपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि च मम पूजां स्वीकुरूष्वमे ।। श्री गणपतये नमः अर्घं पाद्यं स्नानं गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं च दक्षिणाम् समर्पयामि ।।

卐 गौरी पूजन 卐

ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्ध साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते ।। (ॐ गौरी देव्यै नमः ....समपयामि)

वरूण (कलश) पूजन

ॐ कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रूद्रो समाश्रितः मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणास्मृता । कुक्षौ तु सप्त सागरः सप्तदीपे वसुन्धरा ।। ऋग्वेदोऽथ यर्जुवेदो सामवेदोऽथर्वणा । अङ्गैश्च संहिता सर्वे कलशं तु समाश्रिता ।।
देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि यथा कुम्भः विद्यृतो विष्णुनांस्वयम् ।। त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवा सर्वे त्वयि स्थिताः । त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापति । आदित्या वसुवो रूद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ।। त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतकामः फल प्रदः । त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोदभ्वं सानिध्यं कुरुमे देव प्रसन्नो भव सर्वदाः ।।

ॐ वरुणाय नमः आवाह० स्थाप० च मम पूजाम् स्वीकुरूष्व मे ॥ ॐ वरूणाय नमः अर्घपाद्यं स्नानं गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं च दक्षिणां समर्पयामि ॥

नवग्रह पूजन

सूर्य ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्येन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
ॐ सूर्याय नमः आवा० स्था० .... च दक्षिणां समर्प० ॥

चन्द्र - ॐ हिम रश्मि निशानाथं तारकापतिं उत्तमम् ।
औषधीनाम् च राजानां चन्द्र देवाय नमः ॥ ॐ चन्द्राय नमः ॥

मंगल–धरणी गर्भ सम्भूतं विद्युत्तेजः समप्रभम् ।
कुमारं शक्ति हस्तं च श्री भौमाय नमः ॥ ॐ भौमाय नमः ॥

बुध–बुधः बुद्धि प्रदातारं सोम वंश प्रर्वधनम् ।
यजमानस्य हितार्थताय श्री बुधाय नमो नमः ॥ॐ बुधाय नमः॥

गुरू-गुरूः श्रेष्ठो अंगिरा पुत्रः देवानाम च पुरोहितम ।
शक्रस्य मंत्रिणां श्रेष्ठं गुरूदेवाय नमः ॥ ॐ गुरूवे नमः॥

शुक्र-हेमकुन्द मृणालाभं दैत्यानाम परमं गुरूः ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं नमाम्यहम् ॥ ॐ शुक्राय नमः॥

शनि-नीलाजंन समाभासं रविपुत्रो यमाग्रजः ।
छाया मार्त्तण्ड सम्भूतं नमामि श्री शनैश्चरम् ॥ ॐ शनि देवाय नमः॥

राहू-अर्धकाय महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम् ।
सिंहिका गर्भसम्भूतं तं राहू नमाम्यहम् ॥ ॐ राहुवे नमः ॥

केतु-पलास पुष्पं संकाशं तारका ग्रह मस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुं त्वं नमाम्यहम् ॥ ॐ केतुवे नमः ॥

निम्न मंत्र से प्रार्थना करें -

ॐ ब्रह्मा मुरारि त्रिपुरान्तकारी, भानु शशि भूमि सुतो वुधस्य ।
गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वेग्रहाः शान्ति करः भवन्तुः ॥

॥ ॐकार पूजन ॥

ॐकारं विन्दु सयुक्तं नित्य ध्यान्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः ॥ ॐ औंकाराय नमः॥

॥ श्री पूजन ॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पतन्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि
रूपमश्विनौ व्यात्तं इष्णान्निषाणामुम्मइषाण सर्वलोकम् इषाणः ॥ ॐ लक्ष्मै नमः ॥

॥ योगिनी पजून ॥

ॐ आवाहयाम्यहं देवी योगिनी परमेश्वरीम् । योगभ्यासेन सन्तुष्टां परंध्यान समन्विताम्। चतुःषष्टिः समाख्याता योगिन्योहि वर प्रदा। ॐ योगिन्यै नमः॥

॥ब्रह्म पूजन॥

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्धि सीमतः सुरुचोव्वेन आवः । सुबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठा सतश्च योनिमसतश्च विधिः॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥

।। विष्णु पूजन।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदं समूढभस्यपा ॐ सुरे।। ॐ विष्णवे नमः।।

।। रुद्र पूजन ।।

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ शिवाय नमः।।

।।बासुकिपूजन ।।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथ्वी नमु ये चान्तरिक्षे येदिवि तेभ्यस्सर्पेभ्यो नमः।।

ॐ अष्ट कुल नागेभ्यो नमः

।। दिग्पाल पूजन ।।

ॐ त्रातारमिन्द्रम वितारमिन्द्रॐ हवे हवे सहवॐ शूरमिन्द्रॐ हवयामि शक्रं पुरुहुतंमिन्द्रॐ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ इन्द्रादि दश दिग्पालेभ्यो नमः।।

घण्टा पूजन

ॐ आवाहनार्थ तु देवानां गमनार्थतु राक्षसाम कुरु घण्टे महानादं देवताल्हादनं कुरुः।।

ॐ श्री घण्टायै नमः।।

तत्पश्चात् भगवान श्री विश्वकर्मा का पूजन करना चाहिये।

॥ ध्यान ॥

ॐ तमद्भुतं पुरुंषम बुजेक्षणं चतुर्भुजं पंच मुखं त्रिलोचनम् ।
श्री वत्सलक्ष्मांगद कोटि कौस्तुभं पीताम्बरं स्फटिकमौक्तिकोपमम् ॥
ज्योतिर्मयं शान्ति मयं प्रदीप्तं विश्वात्मक विश्वजितं निरीहं ।
आद्यंत शून्यं सकल कला मयं श्री विश्वकर्माणं अहं नमामि ॥

॥ आवाहन ॥

ॐ गुणिगणा ब्रतं हाब्धिजाधरं मृगजभूषणैश्वर्य भूषितमं। मणिगणोज्ज्वलं पूजितं छवि विमल भासमावाहयाम्यम् ॥ ॐ श्री विशवकमर्णे नमः आवाहनार्थ अक्षतान समर्प०॥

॥ आसन ॥

ॐ विधिमुखामरैनम्र मूर्तिभिर्मुकुट काञ्चनो द्दीप्ति दीपितम् ।
वर मणि प्रभा सुन्दरम् नवं भजभजासनं स्वर्ण सम्भवम् ॥
ॐ श्री विश्वकमर्णे नमः रत्नरचितार्थम अक्षतं समर्प० ॥

॥ पाद्य ॥

ॐ भवभयोद्धृतौ यत्पदार्चनं सकल सम्पदाम दायकं च यत ।
जलमयं शुभं पाद्युमुत्तमं परम शान्तये तुम्यमऽर्प्यते ॥ ॐ विश्व०पाद्यम् समर्प ॥

॥ अर्घ्य ॥

ॐ यदभिसेवनात ताप संततिर्भवति निष्फला ताम्र पात्रम् ।
तदखिलं युतं तीर्थ वारिभिः समर्पये तव अहं अर्घ्यमुत्तम् ॥ ॐ श्री विश्व० अर्घ्य समर्प० ॥

॥ आचमन ॥

ॐ यदभिसेवनात संसृतौ जनः नृपति सन्निभा सम्भवन्तिहि ।
सुर सरिज्जलं तीर्थ वारिभिः परिददाम्यथाचाम्य मुत्तममम् ॥ ॐ श्री विश्व०आचमन० ॥

॥ पंचामृत स्नान ॥

ॐ दधिपयो युतं जलमनुत्तमम मधुमितोज्जवलं गृह्यतां प्रभो।
कृपण वत्सलं त्वां दयानिधि सपदि पञ्चकै स्नापयाम्यहं ॥

ॐ विश्व० पंचामृत स्नानं करिष्यामि ॥

॥ शुद्ध जल स्नान ॥

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती । नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन सन्निधि कुरू ॥ ॐ श्री विश्व० शु०ज०स्नान करिष्यामि ॥

॥ वस्त्र ॥

ॐ कनक निर्मितं चित्र वर्णकं वरतरं जनस्पर्श सौख्यदम ।सुरसुखोचितं छायायां युतं तव समर्पये वस्त्रं युगम् ॥ ॐ श्री विश्व०युगल वस्त्रं समर्प० ॥

॥ यज्ञोपवीत ॥

ॐ त्रिगुणितं सितैसूत्र तन्तुभिः कृतमिंद मया भक्ति भावतः ।
प्रति ददाम्यहं बन्ध मोक्षकं तनु विभूषकं यज्ञ सूत्रम ॥ॐ श्री विश्व० यज्ञोप०समर्प०॥

॥ गन्धम् ॥

ॐमृगमदादिजं चन्दनोक्षितं परिमलोतमं कुंकुमान्विताम् ।
मुदितषट्पदं तापनाशनं तव समर्पये गन्धमुत्कटम् ॥ॐ विश्व० गन्ध समर्प०॥

॥ अक्षत ॥

ॐ गन्धमर्पणानन्तरं विभौ अक्षतैस्तुते पूज्याम्यहम्। अंकुरादिभिः पुष्पपत्रकैः अर्चयामि जगदीश्वरः ॥ॐ विश्व॰अक्षतं समर्प॰॥

॥ पुष्प ॥

ॐ वकुल मालती नीप यूथिकाः कनक पंकजैर्दिव्य गन्धकैः। तुलसिकोत्तमैः शोभनैर्दलैः भवततेऽर्पितामत्कृतार्हणं ॥ॐ विश्व॰ पुष्पं च पुष्प मालां समर्प॰॥

॥ धूप ॥

ॐ हरिणदेहजैर्गन्ध संचयैः प्रमुदितामरै भूतिदोद्धुरैः।
अगरू गुग्गलैः भूरिभूषितं तव समर्पये धूपं उत्तमम् ॥ ॐ विश्व॰ धूपं समर्प॰ ॥

॥ दीप ॥

ॐ तिमिर नाशकं सूत्र तन्तुभिः ऋतुसुवर्तिभिः पुष्टिदं शुभम्।
सकल सिद्धिदं चाज्यसम्भृतं तव समर्पये दीपकं प्रभो ॥ ॐ विश्व॰ दीपं समर्प॰॥

॥ नैवैद्य ॥

ॐ विविध भक्षितम् दुग्धमिश्रितं कनक भाजने रक्षितं प्रभो। सुरभि संस्कृतं सुस्वादु शर्करं प्रति निवेदये तृप्तिदं तव ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यनाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा समानाय स्वाहा। श्री विश्व॰ नैवेद्यं समर्प॰ च जलं आचमनीयं समर्प॰

॥ ऋतु फल ॥

ॐ नाना फलानि दिव्यानि पीयूषानि च हे प्रभो ।

गृह्यन्ताम् निजं तोषाय नित्य श्रेयोऽहं आप्नुयाम ॥ ॐ विश्वक० ऋतु फलं समर्पं० ॥

॥ ताम्बूल ॥

ॐ पुंगी फलम महादिव्यम् नाग वल्लीदलैर्युतम ।

एलादि चूर्ण सयुंक्तम् ताम्बूलं समर्पयामि ॥ ॐ विश्व० ताम्बूलं समर्पं०॥

॥ दक्षिणा ॥

ॐ हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमवीजं विभावसौ ।

अनन्त पुष्य फलदमतः शान्तिः प्रयच्छमे ॥ ॐ विश्व० दक्षिणां समर्पं० ॥

॥ नीराजन ॥

ॐ नीराजन दीपाय नमः चन्दनं पुष्पं समर्पयामि ।

कृतानेन जनेन भगवान श्री विश्वकर्मा प्रीयंताम् ॥ ॐ विश्व० आरतक्यै समर्पं०॥

इसके बाद यदि भगवान विश्वकर्मा की कथा होना हो तो आचार्य यजमान को कथा सुनावे। कथा के बाद अथवा पूजन के बाद हवन करना चाहिये।

हवन विधि

हवन करने के लिए सुन्दर एवं शुद्ध वेदी में समिधा चुन लेना चाहिये फिर चम्मच या प्रोक्षणी पात्र में कपूर या घी की बत्ती रख अग्नि प्रदीप्त करें–

ॐ भूर्भुवः स्वः (इस मंत्र से अग्नि प्रदीप्तकर निम्न मंत्र से अग्नि हवन कुण्ड (वेदी) में स्थापित करें) –

ॐ भूर्भुवः स्वःऽद्यौरिवभुम्ना पृथ्वीव वरिम्णा ।

तस्यास्ते पृथिवी देव यजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ।।

निम्न मंत्र से अग्नि प्रज्वलित करें–

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्ठा पूर्ते स ँ सृजेथा मयंच ।

अस्मिन संधस्थे अध्युत्तरस्मिन विश्वे देवा यजमानश्च सीदतः।।

निम्न तीन मंत्रों से ३ समिधा घृत में डुबाकर तीन बार आहुति दें –

१. ॐ अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्ने नेध्यश्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय

चास्मान प्रजया पशुभिर्ब्रह्म वर्चसे नान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।।१।।

इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम ।।

२. ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम । अस्मिन हव्या जुहोतन स्वाहा ।। सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे स्वाहा ।।२।। इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम ।।

३. ॐ तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा ।।३।। इदं अग्नयेऽङ्गिरसे इदं न मम ।।

निम्न मंत्र से पांच आहुतियां घी की प्रदान करें –

ॐ अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्ने नेध्यश्वच वर्धस्व चेद्ध वर्धय चा स्मान प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे नान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।। इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम ।।

निम्न मंत्रों से वेदी के चारों ओर जल छिड़कें –

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व ।।१।। (वेदी के पूर्व दिशा में)

ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व ।।२।। (पश्चिम दिशा में)

ॐ सरस्वत्यनुमन्यस्व ।।३।। (उत्तर दिशा में)

ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।। (वेदी के चारों ओर)

– निम्न मंत्रों से घृत से आहुति प्रदान करें –

ॐ अग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये इदन्नमम ।।१।। (वेदी के उत्तर भाग में)

ॐ सोमाय स्वाहा ।। इदं सोमाय इदन्नमम ।।२।। (दक्षिण भाग में।

ॐ प्रजापतये स्वाहा ।। इदं प्रजायतये इदन्नमम ।।३।। (मध्य भाग में)

ॐ इन्द्राय स्वाहा ।। इदमिन्द्राय इदन्नमम ।।४।। (मध्य में)

ॐ भूरग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये इदन्नमम ।।५।। (मध्य में)

ॐ भुवर्वायवे स्वाहा ।। इदंवायवे इदन्नमम ।।६।। (मध्य में)

ॐ स्वरादित्याय स्वाहा ।। इदमादित्याय इदन्नमम ।।७।। (मध्य में)

ॐ भुर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।।८।। इदं अग्निव्याव्यादित्याय इदन्न मम ।। (मध्य में)

निम्न मंत्रों से शाकल्य (हवन सामग्री) से हवन प्रारंभ करना चाहिये–

ॐ श्री गणपतये स्वाहा ।। इदं गणपतये इदन्न मम ।।

ॐ श्री लक्ष्मी नारायणाय स्वाहा ।। इदं लक्ष्मी नारायणाय इदन्न मम ।।

ॐ श्री उमा महेश्वराय स्वाहा ।। इदं उमा महेश्वराय इदन्न मम ।।

ॐ श्री वाणी हिरण्यगर्भाय स्वाहाः ।। इदं वाणीहिरण्यगर्भाय इदन्न मम ।।

ॐ श्री शचीपुरन्दराय स्वाहा ।। इदं शचीपुरन्दराय इदन्न मम ।।
ॐ श्री इष्ट देवाय स्वाहा ।। इदं इष्ट देवाय इदन्न मम ।।
ॐ श्री कुल देवताय स्वाहा ।। इदं कुल देवाय इदन्न मम ।।
ॐ श्री ग्राम देवताय स्वाहा ।। इदं ग्राम देवताय इदन्न मम ।।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः स्वाहा ।। इदं सर्वदेवाय इदन्न मम ।।
ॐ सूर्यादि नवग्रह देवताय स्वाहा ।। इदं नवग्रह देवताय इदन्न मम ।।
ॐ षोडश मातृकाय स्वाहा ।। इदं षोडश मातृकाय इदन्न मम ।।
ॐ पंच भूताय स्वाहा ।। इदं पंच भूताय इदन्न मम ।।
ॐ लोक पालाय स्वाहा ।। इदं लोक पालाय इदन्न मम ।।
ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा ।। इदं क्षेत्रपालाय इदन्न मम ।।
ॐ योगिन्यै स्वाहा ।। इदं योगिनी इदन्न मम ।।
ॐ मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो स्वाहा ।। इदं मातृ पितृ इदन्न मम ।।
ॐ श्री गुरूवे नमः स्वाहा ।। इदं गुरू इदन्न मम ।।

इसके बाद ऋग्वेद मंडल १० सूक्त ८१-८२ के विश्वकर्मा सूक्त से तत्पश्चात् पुरुष सूक्त से हवन करना चाहिये-

श्री विश्वकर्मा सूक्त

ॐ य इमाविश्वा भुवनानि जुहवदृषिर्होतान्य सीदत्पिता नः ।
सः आशिषां द्रविणमिच्छमानः प्रथमच्छ दवरां २ आविवेशः ॥१॥
ॐ श्री विश्वकमर्णे स्वाहा ॥ इदं विश्वकर्माय इदन्न मम ॥
ॐ किंस्विदासी दधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वित्कथा सीत ।
यतोभूमि जनयन विश्वकर्मा विद्या मौर्णोन्महिमा विश्वचक्षाः ॥२॥
ॐ विश्वतश्चक्षुरूत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरूत विश्वतस्पात् ।
संवाहुभ्यां धमति संपत्रै र्धावाभूमि जनयन देव एकः ॥३॥
ॐ किं स्विदवनं क उस वृक्ष आस यतो द्यावा पृथ्वी निष्टतक्षुः ।
मनीषिणो मनसा पृच्छते दुतध्यातिष्ठद् भुवनानिधारयन ॥४॥
ॐ यातेधामानि परमाणि याऽवमाया मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा ।

शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधाव: स्वयं यजस्व: तन्वं वृधान: ॥५॥
ॐ विश्वकर्मन हविषा वावृधाना: स्वयं यजस्व: पृथ्वी मुतद्याम: ।
मुह्यन्त्वन्येऽअमित: जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु ॥६॥
ॐ वाचस्पति: विश्वकर्माणमुतये मनोजुवं वाजे आद्याहुवेम ।
सनो विश्वानि हवनानि जोषद् विश्वशम्भू रवसे साधु कर्मा ॥
ॐ चक्षुष: पितामनसाहि धीरो घृतमेने अजनन नम्नमाने ।
यद्रेदन्ता अदद्रहन्त पूर्वे आदिद्द्यावा पृथ्वी अप्रथेताम् ॥८॥
ॐ विश्वकर्मा विमना आद्विहायाधाता विधाता परमोत सन्दृक ।
तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्त ऋषीन पर एक माहु: ॥९॥
ॐ यो न:पिता: जनिता यो विधाता धामानिवेदभुवनानि विश्वा: ।
यो देवानां नामधा एक एवं तं सम्प्रशनंभुवना यन्त्यन्या ॥१०॥

ॐ तं आयजन्त द्रविणं समस्मा ऋषयः पूर्वे जरितारो नः भूना ।
असूर्ते सूर्ते रजसि निषते ये भूतानिसम कृण्वन्निमानि ॥११॥
ॐ परोदिवा पर एना पृथिव्या परोदेवे भिरसुरै र्यदस्ति ।
कंस्विदं गर्भम्प्रथमं दघ्र आपो यत्र देवाः समपश्यन्तविश्वे ॥१२॥
ॐ तंमिदं गर्भम्प्रथमं दघ्र आपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे ।
आजस्य नाभावध्येकमर्पितं यस्मिन विस्वानिभुवनानि तस्थु ॥१३॥
ॐ न तं विताथ य इमा जजानान्यद् युष्माकं मन्तरं वभूवः ।
नीहारेण प्रावृत्ता जल्पया चा सुतृप उक्थशा सेश्चरन्तिः ॥१४॥
ॐ विश्वकर्मन हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रम कृष्णोरवध्यम् ।
तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो् यथाऽसत् ॥१५॥
ॐ विश्वकर्मा ह्ययजनिष्ट देव आदिद गन्धर्वो अभवद् द्वितीयः ।
तृतीयः पिता जनतौषधीनामपां गर्भव्याध्यात्पुरूत्रा ॥१६॥

॥ पुरूष सूक्त ॥

हरिॐ सहस्र शीर्षा पुरूषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
स भूमि ,ं सर्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठ्द् दशाङ्गुलम ॥१॥

ॐ विश्वकमर्णे नमः स्वाहा ॥ इदं विश्वकर्माय इदन्न मम ॥

ॐ पुरूषःऽएवेद ,ं सर्वषद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्त्वस्ये शानोयदन्ने ना तिरोहति ॥२॥
ॐ एतावा नस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः ।
पादोऽस्यविश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतिन्दिवि ॥३॥
ॐ त्रिपादूध्वर्ा उदैत्पुरूषः पादोस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ व्यक्रामत्साशना नशनेऽ अभिः ॥४॥
ॐ ततो विराडज्ञायत विराजोऽअधि पुरूषः ।
सजातोऽअत्यरिच्चय तपश्चाद्भू सिमथोपुरः ॥५॥
ॐ तस्माद्य ज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये ॥६॥

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत:ऽऋच: सम्भृतम्पृषदाज्यम् ।
छंदाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद्य जायत ॥७॥
ॐ तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चो भयादत: ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मांतस्मां जाता अजावय: ॥८॥
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन्न पुरूषञ्जातमग्रत: ।
तेन देवाऽ अयजन्त साद्धयाऽ ऋषयश्चये ॥९॥
ॐ यत्पुरूषं व्यदधु: कतिधाव्य कल्पयेन ।
मुखङ्कि मस्यासीत्किम्बाहु किमुरू पादोऽउच्चयेते ॥१०॥
ॐ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद बाहूराजन्न्याकृता: ।
उरूतदस्य यद्वैश्य: पद्भयां शूद्रोऽअजायत ॥११॥
ॐ नाभ्यांऽ आसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत् ।
पद्भ्याम्भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथालोकाँ २ अकल्पयन् ॥१२॥
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो: सूर्योऽ अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणाश्च मुखादग्निर जायत ॥१३॥

ॐ यद पुरूषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्नवत: ।
बसन्तोऽस्या सीदाज्यङ्गीष्मः ऽइष्मः शरद्धविः ॥१४॥
ॐ सप्तास्यासन्न परिधयस्त्रि: सप्त समिधः कृतः ।
देवा यद्यज्ञन्तन्न्वानाऽ अबघ्नन्न्पुरूषम्पशून ॥१५॥
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवाः ॥१६॥
ॐ अद्भ्य: सम्भृत: पृथिव्यैरसाच्चय विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे ।
तस्य त्वष्ट्रा विदधद्रूपमेति तन्न्मर्त्यस्य देवात्वमाजानमग्रे ॥१७॥
ॐ वेदाहमेतं पुरूषं महान्तमादित्य वर्णन्तम सः परस्तात् ।
तमेव विदित्त्वाति मृत्युमेतिनान्न्यः पंथा विद्यतेयनाय ॥१८॥
ॐ प्रजापतिश्च रतिगर्भेऽअन्तर जायमानो बहुधा विजायते ।
तस्य योनिम्परि पश्यन्तिधीरा स्तस्मिन्न्हतस्थु र्भुवनानिविश्वा ॥१९॥
ॐ यो देवेभ्यो आतपति यो देवानाम पुरोहितः ।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रूचाय ब्राह्मये ॥२०॥

तत्पश्चात् निम्न मंत्रों से ५-५ आहुति दें -

॥ गायत्री मंत्र ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥ ॐ गायत्र्यै देव्यै नमः स्वाहा ॥ इदं गायत्री इदन्न मम ॥

-महामृत्युञ्जय मंत्र-

ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् । उर्वारूकमिव वन्धनान्मृतोर्मुक्षीय मातृतात् ॥ ॐ महामृत्यञ्जाय नमः स्वाहा ॥ इदं महामृत्यु० इदन्न मम ॥

तत्पश्चात् पान के पत्ते पर सुपाड़ी व शेष शाकल्य को रखकर खड़े होकर यज्ञ भगवान को पूर्णाऽहुति प्रदान करें -

ॐ पूर्णो अदः पूर्णो इदं पूर्णात पूर्ण उदच्यते । पूर्णस्य पूर्ण आदाय पूर्ण मेवा वशिष्यते ॥ ॐ सर्वं वै पूर्ण ॐ स्वाहा ॥

इसके बाद भगवान विश्वकर्मा की आरती करना चाहिये। आरती के बाद पुष्पांजलि प्रदान करके अपराध क्षमा प्रार्थना करते हुए देव विसर्जन कर कार्यक्रम समाप्त करना चाहिये।

।। अथ मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा ।।

सामान्य पूजा में प्राण प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं पड़ती है मात्र षोऽशोपचार विधि का ही प्रयोग किया जाता है जो पूर्व में दी गई हैं परन्तु जब मंदिर में नवीन मूर्ति स्थापित की जाती है तो उसमें प्राण प्रतिष्ठा करना अत्यन्त आवश्यक होता है इसी विचार से प्राण प्रतिष्ठा विधि यहाँ अलग से दी जा रही है विद्वानजन आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

प्राण प्रतिष्ठा विधान देव आवाहन तथा आसन प्रदान करने के बाद प्रांरभ होता है। सर्वप्रथम यजमान निम्न मंत्र से विनियोग करें –

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः ऋषय ऋग्यजुः सामाथर्वणः छन्दांसि चैतन्य रूपा । परा प्राण शक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकम् श्री विश्वकर्मा देवस्य प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः ।।

इसके बाद यजमान अपने शरीर में निम्न मंत्रों से अंग न्यास व करन्यास करें –

ॐ वों हृदयाय नमः ।। ॐ वीं शिरसे स्वाहा ।। ॐ बुं शिखायै वषट् ।।
ॐ वैं कवचाय हुम ।। ॐ वौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।। ॐ वः अस्त्राय फट् ।।
ॐ वां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।। ॐ वीं तर्जनीभ्यां नमः ।।

ॐ बूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ वैं अनामिकाभ्यां नमः ॥
ॐ कनिष्ठकाभ्यां नमः ॥ ॐ वः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् ॥

इसके बाद यजमान अपने हाथ में एक सुन्दर सा पुष्प लेकर आचार्य द्वारा निर्देशानुसार मूर्ति के अंगों को पुष्प से स्पर्श कर (पहले कर न्यास फिर अंग न्यास द्वारा) मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करें –

॥ करन्यास ॥ (मूर्ति के हाथों की अगुलियों का स्पर्श करना है)

ॐ आं ह्रीं क्रों अं कं खं गं घं ङं क्रों ह्रीं आं पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशात्मने आं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ (अंगुठे स्पर्श करें)

ॐ आं ह्रीं क्रों इं चं जं झं त्रं क्रों ह्रीं आं शब्द स्पर्श रूप रस गन्धात्मने ईं तर्जनीभ्यां नमः ॥ (तर्जनी का स्पर्श)

ॐ आं ह्रीं क्रों उं टं ठं डं ढं णं ॐ क्रों ह्रीं आं श्रोत्वक चक्षुर्जिव्हा घ्राणात्मने ॐ मध्यमाभ्यां नमः ॥ (मध्यमा अंगुली स्पर्श)

ॐ आं ह्रीं क्रों एं तं थं दं धं जं ऐं क्रों ह्रीं आं वाक् पाणिपादया यूप स्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः ॥ (अनामिका स्पर्श)

ॐ आं ह्रीं क्रों ओं पं फं बं भं मं औ क्रौं ह्रीं आं वचना दान गति विसर्गानन्दात्मने ॐ कनिष्ठाकाभ्यां नमः ।। (कनिष्ठका स्पर्श)

ॐ आं ह्रीं क्रों अं यं रं लं वं शं षं सं लं क्षं अः क्रों ह्रीं आं मनोऽहंकार चित्त विज्ञानात्मने करतल कर पृष्ठाभ्याम् नमः ।। (हाथों की गदेली एवं गदेली के पृष्ठ भाग को स्पर्श करें)

।। हृदयादिन्यास ।। (मूर्ति के अंग स्पर्श करना है)

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पति र्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमंधातु । विश्वे देवासः इहमादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ ।।१।।

ॐ हृदयाय नमः ।। (हृदय स्पर्श)

ॐ अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुर्भिवा यतिमुषासम् । यह्वाइवप्रवया मुञ्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छः ।।२।। ॐ शिरसे स्वाहा ।। (सिर स्पर्श)

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम ।

कविः साम्राज्यमतिथि जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ।।३।।
ॐ शिखायै वषट् ।। (शिखा स्पर्श)
ॐ मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम् ।
उरोर्वरीयो वरूणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवामदन्तु ।।४।।
ॐ कवचाय हुम ।। (कवच स्पर्श)
ॐ विश्वतश चक्षुरिति विश्वतो मुखो विश्वतो वाहुरूत विश्व तस्पात ।
सं बाहुभ्याम धमति सं पतत्रैर्द्यावा भूमि जनयन देव एकः ।।५।।
ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ।। (नेत्र स्पर्श)
ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषिमा नो गोषु मानो अश्वेषुरीरिषः ।
मानो विरान रूद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।।६।।
ॐ अस्त्राय फट् ।। (आयुध स्पर्श)
तत्पश्चात यजमान अपने हाथों में अक्षत पुष्प ले, आचार्य प्राणावाहन करें –
ॐ आं ह्रीं क्रां अं यं रं लं वं षं सं हं क्षं अः क्रों ह्रीं आं श्री विश्वकर्मा

देवस्य इह प्राणा इह प्राणाः ।।१।।

ॐ आं ह्रीं क्रां अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं अः क्रों ह्रीं आं श्री विश्वकर्मा देवस्य जीव इह स्थितः ।।२।।

ॐ आं ह्रीं क्रां अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः क्रों ह्रीं आं श्री विश्वकर्मा देवस्य सर्वेन्द्रयाणि वाङ्मनः त्वक चक्षुः श्रोत जिव्हा घ्राण पाणि पाद पायूपस्था इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।।३।। (हाथ के अक्षत पुष्प मूर्ति पर छोड़ दें) इसके बाद अंजलि में अक्षत पुष्प लेकर प्राण शक्ति का ध्यान करें–

ॐ रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्ल सदरूण सरोजाधिरूढ़ा कराब्जैः पाशं कोदण्डभिक्षुद्भवगुण मणिमय्यं कुशं पंचवांणान् ।
विभ्राणास्त्रक्कपालं त्रिनयन लसिता पीनबक्षो रूहाढयां देवी बालार्क वर्ण भवतु सुखकरी प्राणाशक्तिः परान्नः ।।

अंजलि के अक्षत पुष्प भगवान को समर्पित करते हुए भगवान को प्रतिष्ठापित करें –

ॐ मनोजूति र्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञंः

सम्मिमंदधातु । विश्वेदेवा सःइह मोदयन्तामों ३ प्रतिष्ठः ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च संख्यायै स्वाहा ।। अस्यै प्रतिमायाम श्री विश्वकर्मा सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ।।

इस प्रकार प्राण प्रतिष्ठा करके अक्षत पुष्प चढ़ाते हुए प्रार्थना करें–

ॐ दंशपाल महावीर सुचित्र कर्मकारकाः । विश्व कृत विश्व धृक च त्वं वसना मानदण्ड धृक ।।

भो विश्वकर्मन इहा गच्छ इहतिष्ठ । अत्राधिष्टान कुरू कुरू मम पूजा गृहाण ।।

हे श्री विश्वकर्मा जी यहाँ आईये इस सुन्दर प्रतिमा में विराजिये और कृपाकर मेरी पूजा–अर्चना स्वीकार कीजिये। उपरोक्त विधि से प्राण प्रतिष्ठा के बाद पाद्य अर्ध अदि षोऽश प्रकार से भगवान का पूजन करना चाहिए।

।। इति प्राण प्रतिष्ठा विधि ।।

॥ आरती ॥

ॐ जय विश्वकर्मा हरे, प्रभु जय विश्वकर्मा हरे।
शरणागत के स्वामी, पूरण काज करे॥ ॐ जय ....
तुम हो विश्वविधाता, तुम विष्णु स्वामी।
शंकर आप स्वयंभू, तुम त्वष्ट्रा नामी॥ ॐ जय ....
तुम आदित्य अगोचर, तुम हो अविनाशी।
हिरण्यगर्भ सुखराशि, तुम मंगल राशि॥ ॐ जय ....
देवनदेव महात्तम, बहु विधि श्रुति गावै।
ध्यान धरै निशिवासर, तव जन सुख पावै॥ ॐ जय ....
भाल विशाल त्रिपुण्ड विराजत, मस्तक मुकुट धरे।
लख विराट प्रभु रूप तिंहारा, मम मन मोदभरे॥ ॐ जय ....
विनय करूं कर जोरी, मम दुख हर लीजै।
ज्योति ज्ञान जगाओ, उर उज्जवल कीजै॥ ॐ जय ....
शांति सुधा वरसाओ, क्लेश हरो मन का।
तन मन धन से सेवक, मैं तेरे चरणन का॥ ॐ जय ....
तुम पितु मातु सहाई, मैं दासन दासा।
भक्ति भाव से पूरण कर दो, मम मन अभिलाषा॥ ॐ जय ....

ॐ जय विश्वकर्मा हरे, प्रभु जय विश्वकर्मा हरे।
शरणागत के स्वामी, शिल्पी जनों के स्वामी,
पूरण काज करे ।। ॐ जय ....

।। पुष्पाञ्जली ।।

ॐ वन्दे विज्ञान देवेशं शिल्पशास्त्र प्रर्वतंकम्। जगत स्वरूपिणे विश्वकर्मणे ते नमो नमः ।। ब्रह्म विद्योपदेष्टारं दिव्य रूपं महाबलम्। सत्य व्रंत कृपा सिन्धु नमामि विश्व वंदितम् ।। विश्वकर्माय नमः मन्त्र पुष्पाञ्जली समर्पयामि ।।

।। क्षमा प्रार्थना ।।

ॐ अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽ हर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वाक्षमस्व परमेश्वरः ।।१।। आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजा चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरः ।।२।।

।। विसर्जन ।।

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्ट काम प्रसिद्धयर्थ पुनरागमनाय च ।। लक्ष्मी कुबेरश्च सरस्वती विहाय सर्व देवाः स्वस्थानं गच्छन्तु ।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

।। इति श्री विश्वकर्मा पूजा विधि ।।

पांचाल ब्राह्मणों के शाखा सूत्रादि वर्णन

नाम	मनु	मय	त्वष्टा	शिल्पी	दैवज्ञ
भार्या	कांचना	सुलोचना	जयन्ती	करुणा	चन्द्रिका
प्रवर	सद्योजात	वामदेव	अघोर	तत्पुरुष	ईशान
शाखा	ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद	प्रणववेद
सूत्र	आश्वलायन	आपस्तम्भ	दाक्षायण	वौद्धायन	कात्यायन
ऋतु	बसन्त	ग्रीष्म	वर्षा	शरद	हेमन्त
दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	उर्ध्व
कर्म	लोह	काष्ठ	ताम्र	शिला	सुवर्ण
कुण्ड	त्रिकोण	चौकोर	षटकोण	अष्टकोण	वर्तुल
देवता	रुद्र	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	सूर्य
तत्व	अग्नि	जल	पृथ्वी	वायु	आकाश
गोत्र	सानग	सनातन	अहभून	प्रत्न	सुपर्ण

आरती
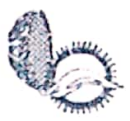
आरति प्रभु विश्वकर्मा जी की । कीरति जगत कला शिल्पी की ।।
सनग सनातन अहभून की । प्रत्नसुपर्ण पांचाल ऋषियों की ।।१।।
मनु मय त्वष्टा शिल्पी दैवज्ञ की । पंच कला मनु पंचानन की ।।२।।
भुवन पुत्र ऋषि विश्वकर्मा की । इन्द्र पुरोहित विश्वरुप की ।।३।।
नल अरु नील चतुर शिल्पिन की । महावीर विज्ञान जगत की ।।४।।
चार वेद उपवेद शास्त्र छै । शिल्प शास्त्र कल्याण जगत की ।।५।।
सत चित आनन्द पंचानन की । वेद बखानत सकल शिल्प की ।।६।।
जग पालक जय जगत पिता की । परम पूज्य प्रभु सरवेश्वर की ।।७।।
संकट मिटै सर्व सुख हिय की । पूजत विश्वकर्मा भगवन की ।।८।।
आरति करत परम सुख मन की । विश्वकर्मा जय जगदीश्वर की ।।९।।

प्रथम संस्करण - १००० प्रति - १७ सितम्बर २०००